

अध्याय 6 निष्कर्ष एवं सिफारिशें

6.1 निष्कर्ष

अन्वेषण अवस्था पर ₹ 6,206.83 करोड़ की लागत पर अधिप्राप्त 36 परिसम्पत्तियों में से, कम्पनी को पांच परियोजनाओं में ही सफलता मिली जिनमें से चार अर्ध विकसित अवस्था में थी और केवल एक परियोजना में ही उत्पादन हो रहा था, ₹ 1,066.17 करोड़ की लागत वाली आठ परियोजनाओं को छोड़ना पड़ा था और शेष 23 परियोजनाएं अभी भी अन्वेषण की प्रक्रिया में थी। कम्पनी की उत्पादक तथा विकसित परिसम्पत्तियों में 185.995 मिलियन मीट्रिक टन तेल समकक्ष का प्रमाणित हाइड्रोकार्बन भंडार था ।

कम्पनी प्रमुखतः कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि के कारण विगत छः वर्षों के दौरान लगातार लाभ कमा रही थी। कच्चे तेल तथा गैस का उत्पादन 2004-05 से 2007-08 में बढ़ गया और उसके पश्चात् लगभग स्थिर रहा। कम्पनी का लाभ मुख्यतः नौ उत्पादक परिसम्पत्तियों में से सात से था, जिनमें से आठ परिसम्पत्तियां (₹ 46,086.19 करोड़ के निवेश वाली) उत्पादन/खोज अवस्था में अधिप्राप्त की गई थी। कम्पनी किसी भी ब्लॉक में (सेवा ठेकों को छोड़कर) एकमात्र प्रचालक के रूप में हाइड्रोकार्बन की खोज करने में सफल नहीं हुई थी। कम्पनी के पास संयुक्त उद्यमों के निर्माण हेतु निवेश अवसरों तथा दिशानिर्देशों के मूल्यांकन हेतु कोई प्रलेखित नीति नहीं थी । परिणामतः कम्पनी जोखिम न्यूनीकरण का लाभ नहीं उठा सकी और उसने ₹ 2367.77 करोड़ का निष्फल व्यय किया।

निष्कर्षतः निवेश अवसरों के मूल्यांकन तथा संयुक्त उद्यमों के निर्माण हेतु समुचित उद्यम प्रक्रिया के प्रयोग हेतु ढांचागत प्रलेखित नीति के अभाव में, कम्पनी जोखिम को कम करने तथा जेवी भागीदारों की संयुक्त वित्तीय ताकत तथा विशेषज्ञता से लाभ उठाने में सक्षम नहीं थी। इसके अतिरिक्त, यद्यपि संयुक्त प्रचालन करारों में लेखापरीक्षा प्रबंधों के प्रावधान शामिल थे, कम्पनी अपने लेखापरीक्षा अधिकारों के विलम्बित प्रयोग के कारण अपने वित्तीय हितों की पर्याप्त सुरक्षा नहीं कर सकी। इस तथ्य के मद्देनजर कि कम्पनी भिन्न राजनैतिक तथा प्रचालनात्मक हालात में प्रचालन करती है, कम्पनी के लिए पणधारियों को आश्वासन प्रदान करने के लिए प्रभावी आन्तरिक लेखापरीक्षा तन्त्र सहित एक कड़ी आन्तरिक नियंत्रण प्रणाली होना अनिवार्य है। यद्यपि कम्पनी लाभ में चल रही है, तथापि लेखापरीक्षा में देखी गई अनियमितताएं दर्शाती हैं कि सुधार की गुंजाईश है तथा कम्पनी को अपने प्रचालन करने के समय अधिक व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

सिफारिशें # 4

महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सिफारिशें प्रस्तावित की जाती हैं:

- कम्पनी उत्पादक, अन्वेषित तथा खोज परिसम्पत्तियों की प्राप्ति के लिए निवेश अवसरों के मूल्यांकन के लिए पेट्रोलियम संसाधन प्रबन्धन प्रणाली की प्रथाओं के अनुरूप एक नीति बनाए और मार्गनिर्देश तैयार करे ताकि जोखिमों को कम किया जा सके।
- कम्पनी को संयुक्त उद्यमों की रचना के लिए मार्गनिर्देश तैयार करने चाहिए ताकि जोखिम कम किया जा सके, संयुक्त वित्तीय शक्ति को बढ़ाया जा सके और संयुक्त उद्यम भागीदार का अनुभव बांटा जा सके।
- कम्पनी की 16 देशों में विद्यमानता तथा गैर-प्रचालक के रूप में महत्वपूर्ण निवेश के दृष्टिगत उसे अपनी आन्तरिक लेखापरीक्षा तथा नियंत्रण प्रणाली को मज़बूत करना चाहिए तथा संयुक्त उद्यमों की लेखापरीक्षा के लिए समय पर लेखापरीक्षा प्रबंध करने चाहिए।

नई दिल्ली
दिनांक

(सुनील वर्मा)
उप नियंत्रक-महालेखापरीक्षक
एवं अध्यक्ष, लेखापरीक्षा बोर्ड

प्रतिहस्ताक्षरित

नई दिल्ली
दिनांक

(विनोद राय)
भारत के नियंत्रक - महालेखापरीक्षक

